HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-II, (Effects of The Glorious Revolution of 1688)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 76

"1688 ई. की वैभवपूर्ण क्रान्ति के परिणाम"

(EFFECTS OF THE GLORIOUS REVOLUTION OF 1688)

1688 ई. की क्रान्ति के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। इस गौरवपूर्ण क्रांति के परिणाम स्वरूप पार्लियामेन्ट को सर्वोच्च शक्ति प्रदान की गई। यह भी तय किया गया कि प्रोटेस्टेन्ट धर्म का अनुयायी ही केवल इंग्लैंड के सिंहासन पर बैठ सकेगा। इंग्लैण्ड स्वतन्त्र विदेश नीति अपनायेगा। अतः संवैधानिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में इस क्रान्ति का निर्णायक स्थान रहा। जो इस प्रकार है:-

(1) संवैधानिक महत्व तथा परिणाम:—

राजा और पार्लियामेन्ट के मध्य संघर्ष 1688 की क्रान्ति के फलस्वरूप समाप्त हो गया और पार्लियामेन्ट की सर्वोच्चता स्थापित हो गई। 1642 - 1649 ई. काल में इसी सर्वोच्चता के प्रश्न पर गृहयुद्ध हुआ था और राजा चार्ल्स प्रथम को फाँसी दी गई थी। पार्लियामेन्ट ने 1688 ई. में विलियम और मेरी को गद्दी पर बिठाया। राज्यारोहण के पूर्व उन्होंने यह स्वीकार किया कि संविधान के अनुसार वे कार्य करेंगे। इस प्रकार राजा का दैवी सिद्धान्त तथा निरंकुश सत्ता की धारणा अन्तिम रूप से समाप्त हो गई। इस समय पार्लियामेन्ट ने पार्लियामेन्ट की सर्वोच्चता स्थापित करने तथा राजा की सत्ता को नियन्त्रित करने के लिये निम्नलिखित नियमों का निर्माण किया:

(क) बिल ऑफ राइट्स:- एक अधिकार पत्र पार्लियामेन्ट ने विलियम तथा मेरी के समक्ष प्रस्तुत किया। जेन्स द्वितीय के अवैधानिक कार्यों तथा उन शर्तों का उल्लेख इसमें किया गया था जिनके अनुसार विलियम और मेरी को शासन करना था। इस अधिकार-पत्र में कहा गया था (अ) चूँकि जेम्स द्वितीय ने सिंहासन त्याग दिया था अत: विलियम और मेरी को राजा व रानी घोषित किया जाता है। (ब) इंग्लैण्ड के सिंहासन पर भविष्य में बैठने वाला राजा या रानी प्रोटेस्टेन्ट धर्म के अनुयायी होंगे (स) राजा पार्लियामेन्ट की स्वीकृति के बिना कोई कर नहीं लगायेगा। (ट) पार्लियामेन्ट की स्वीकृति के बिना शान्ति काल में राजा स्थायी सेना नहीं रखेगा। राजा की निरंकुश तथा विशेष अधिकार इस प्रकार के अधिकार-पत्र से समाप्त कर दिये गये। राजा को विशेष न्यायालय स्थापित करने का कोई अधिकार नहीं था।

(ख) जनता के अधिकारों की सुरक्षा :- जनता के अधिकारों को अधिकार-पत्र में सुरक्षित किया गया। राजा को कोई भी व्यक्ति प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर सकता था। पार्लियामेन्ट के सदस्यों का अभिव्यक्ति का अधिकार सुरक्षित रखा गया। इसमें राजा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था। किसी व्यक्ति पर भारी जुर्माना नहीं किया जा सकता या अपनी रक्षा के लिये प्रोटेस्टेन्ट धर्म के

अनुयायी को अस्त्र-शस्त्र रखने का अधिकार प्रदान किया गया। मन्त्री संसद के प्रति उत्तरदायी होंगे। चुनाव में राजा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था।

(ग) विशिष्ट कानूनों का निर्माण :- पार्लियामेंट ने पार्लियामेंट की सत्ता को सुरक्षित रखने तथा राजा पर पार्लियामेंट का नियन्त्रण बनाये रखने के लिये कुछ विशिष्ट कानूनों का निर्माण किया। सेना पर पार्लियामेंट का नियन्त्रण म्युटिनी एक्ट के द्वारा स्थापित किया गया। प्रतिवर्ष पार्लियामेंट इस एक्ट को पारित करती थी। सेना को इससे वैधानिक स्वीकृति प्राप्त होती थी। अत: पार्लियामेन्ट की वार्षिक बैठक आवश्यक हो गई। कैथोलिकों को छोड़कर रिलीजस टालरेशन एक्ट के द्वारा सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्रदान की गई। लाइसेंसिंग एक्ट के द्वारा प्रेस को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई। ट्रियेनियल एक्ट के द्वारा पालियामेन्ट का कार्यकाल तीन वर्ष निश्चित कर दिया गया। एक्ट ऑफ सेटिलमेन्ट के द्वारा सिंहासन के उत्तराधिकार का प्रश्न भी पार्लियामेंट ने हल कर दिया। यह कानून अत्यधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि अब राजा से अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने करने का अधिकार छीन लिया गया था।

(2) राजनीतिक महत्व तथा परिणाम :-

इस क्रान्ति के राजनीतिक परिणाम भी दूरगामी तथा निर्णायक थे :

(क) जनसंघर्ष का रूप—पार्लियामेंट की सर्वोच्चता स्थापित करने के लिये हुआ संघर्ष इंग्लैण्ड की सम्पूर्ण जनता का संघर्ष था। इससे प्राप्त राजनीतिक अधिकार इंग्लैण्ड की समस्त जनता के लिये थे। इस काल में स्वाभाविक था कि इस जन संघर्ष का नेतृत्व भूस्वामी या अभिजात वर्ग कर रहा था। दोनों पक्षों का नेतृत्व गृह-युद्ध में भी इसी भूस्वामी वर्ग ने किया था। 1688 ई. की क्रान्ति इस प्रकार जनता की विजय थी। यह प्रजातन्त्र की दिशा में पहला कदम था।

(ख) महान शक्ति के रूप में - इंग्लैण्ड इस क्रान्ति के परिणामस्वरूप यूरोपीय राजनीति में एक शक्तिशाली देश के रूप में उभरा। स्टुअर्ट राजाओं की विदेश नीति दुर्बल और अपमानजनक थी और फ्रांस के हित में इसका संचालन किया जाता था। विलियम के राज्यारोहण से 1688 ई. में इस नीति में परिवर्तन हो गया और फ्रांस विरोधी नीति को अपनाया गया। इससे इंग्लैण्ड की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

(ग) फ्रांस की शक्ति अवरुद्ध होना- 1688 ई. की क्रान्ति के फलस्वरूप इंग्लैण्ड ने हालैण्ड का समर्थन कर फ्रांस के विस्तार को रोकने का कार्य किया। फ्रांस यूरोप का सर्वाधिक शक्तिशाली देश बन गया था। फ्रांस ने चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय के शासनकालों में इंग्लैण्ड में कैथोलिक धर्म की स्थापना का भी प्रयत्न किया था। इंग्लैण्ड का राजा बनते ही विलियम ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। अन्ततः फ्रांस की शक्ति नष्ट हुई तथा इंग्लैण्ड की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। यूरोपीय युद्धों में इंग्लैण्ड ने भाग लिया और प्रथम श्रेणी की शक्ति बना।

(3) संसदीय महत्व तथा परिणाम:-

पार्लियामेंट की कार्यप्रणाली पर भी इस क्रान्ति से निम्न प्रभाव पड़ा।

(क) मन्त्रिमण्डल-प्रणाली आरम्भ होना- पार्लियामेंट को 1688 ई. की क्रान्ति ने शक्तिशाली बनाया। पार्लियामेन्ट में इसके बाद दलीय प्रणाली का विकास हुआ। दलीय प्रणाली से मन्त्रिमण्डल प्रणाली का विकास हुआ। विलियम् ने पहले व्हिग और टोरी, दोनों दलों से अपने मंत्रियों की नियुक्त की थी। 1695 ई. के बाद उसन केवल हिग पार्टी से मन्त्री लिये। इस प्रकार एक दलीय मन्त्रिमण्डल प्रणाली का विकास हुआ।

(ख) जन-स्वातन्त्र्य की स्थापना - अब प्रति वर्ष पार्लियामेन्ट की बैठक होने लगी जिसमें जनता की शिकायतों पर विचार किया जाता था। जनता की स्वतंत्रता इससे सुरक्षित हुई। धार्मिक और अभिव्यक्ति स्वतंत्रता जनता को प्राप्त हुई।

(ग) सिविल लिस्ट पर नियंत्रण - अब मनमाने तौर पर राजा धन व्यय नहीं कर सकता था। पार्लियामेन्ट की स्वीकृति इसके लिये आवश्यक थी। राजा के लिये 7 लाख पौण्ड पार्लियामेट ने स्वीकार किये। इस प्रकार सिविल लिस्ट की प्रणाली आरम्भ हुई।

(घ) राष्ट्रीय ऋण की स्थापना- फ्रांस से युद्ध करने के लिये विलियम को धन की आवश्यकता थी। जनता से यह धन ऋण के रूप मांगा गया। राजा इससे पहले बलपूर्वक ऋण वसूल करते थे। 1688 के बाद यह ऋण पार्लियामेन्ट को दिया गया इससे राष्ट्रीय ऋण स्थापित हआ।

(4) धार्मिक महत्त्व तथा परिणाम:- धार्मिक क्षेत्र में भी 1688 ई. की क्रान्ति के महत्वपूर्ण परिणाम हुए।

(क) प्रोटेस्टेंट धर्म की विजय-1688 ई. की क्रान्ति से यह निश्चित हो गया कि केवल प्रोटेस्टेंट धर्म का इंग्लैण्ड के सिंहासन पर अनुयायी बन सकता था। यह भी प्रावधान किया गया कि वह किसी कैथोलिक से विवाह कर लेने पर वह सिंहासन पर नहीं बैठ सकेगा। पार्लियामेन्ट को धार्मिक मामलों में भी सर्वोच्च शक्ति प्रदान की गई। धार्मिक मामलों में राजा हस्तक्षेप नहीं कर सकता था।

(ख) धार्मिक सहिष्णुता - धार्मिक सहिष्णुता 1688 ई. की क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण परिणाम थी। टालरेशन एक्ट (सहिष्णुता कानून) पारित करके पार्लियामेंट ने कैथोलिक को छोड़कर सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्रदान की थी।

(5) आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव:-

राष्ट्रीय ऋण की नियोजित नीति आरम्भ की गई क्योंकि युद्ध का व्यय अधिक था और जनता में करों में वृद्धि से असन्तोष बढ़ता गया। पालियामेन्ट ने इस राष्ट्रीय ऋण के भुगतान का उत्तरदायित्व लिया। ऋण पर ब्याज दिया जाता था। 1694 ई. में बैंक ऑफ इंग्लैण्ड स्थापित हुई। 1696 ई मुद्रा में सम्बन्धी सुधार हुए।

निष्कर्ष तो हम कह सकते हैं कि 1688 की इंग्लैंड की क्रांति एक सुंदर और गौरवपूर्ण क्रांति थी क्योंकि इस क्रांति के परिणाम स्वरूप संपूर्ण देश को लाभ हुआ। न्यायपालिका को इससे स्वतंत्र बनाया गया। अब जनता निष्पक्ष न्याय प्राप्त कर सकती थी। देश के किसी वर्ग में प्रतिशोध या प्रति हिंसा की भावना नहीं थी। सारी जनता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिली।

धन्यवाद